Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

रामायण का आदिकाव्यत्व एवं उसका सांस्कृतिक तथा साहित्यिक महत्त्व

डॉ. दिलीप कुमार
पूर्व शोध छात्र, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Publication Issue :
March-April-2023
Volume 6, Issue 2
Page Number : 40-42
Article History
Received : 01 March 2023
Published : 15 March 2023

शोधसारांश– रामायण को परवर्ती साहित्य का आधार कहा जा सकता है क्योंकि परवर्ती साहित्य को इसके द्वारा भाव, भाषा और शैली का निर्देश मिला है। माधुर्यमयी उक्तियों का आरम्भ रामायण में ही संस्कृत साहित्य में हुआ है। रामायण की भाषा सुन्दर, ललित, प्रांजल, प्रवाह–पूर्ण तथा परिष्कारयुक्त है।

मुख्य शब्द–रामायण, साहित्यय, भाषा, भाव, शैली सांस्कृतिक।

रामायण अतिप्राचीन एवं लोकप्रिय महाकाव्य है। भारत वर्ष की साहित्यिक परम्परा में वाल्मीकि को 'आदिकवि' और रामायण को 'आदिकाव्य' कहा गया है। वाल्मीकि स्नानार्थ जब गंगा नदी को जा रहे थे, तब रास्ते में उन्हें तमसा नदी मिली। तमसा नदी के जल से मन्त्रमुग्ध होकर ऋर्षि वहीं स्नान करने का निश्चय करते हैं, लेकिन उसी तमसा नहीं के किनारे युगल क्रौंच पक्षी प्रणय क्रिया में लीन थे, जिसे वाल्मीकि को देखकर हर्ष हुआ, लेकिन अचानक कहीं से बाण आकर उन दोनों में से एक आहत हो जाता है जिसे वाल्मीकि देखकर उनके मुख से शोक से प्रेरित होकर यह वाक्य निकलता है–

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम्।।

शौक के कारण वाल्मीकि के मुख से ही संस्कृत की प्रथम कविता निर्गत हुई थी।[1] इस विचित्र रचना पर वाल्मीकि स्वयं चकित हो गये कि तभी ही ब्रह्मा ने प्रकट होकर उनसे कहा– **'ऋषे प्रबुद्धोऽसि वागात्मनि ब्रह्मणि, तद्, ब्रूहि रामचरितम्। अव्याहतज्योतिः आर्षं ते प्रतिभाचक्षुः। आद्यः कविरसि।'[2]**

तमसा–तीर पर **'निषादविद्धाण्ऽज–दर्शनोत्थः'** कवि का शोक श्लोक छन्द में फूट पड़ा, वही कालान्तर में काव्य की आत्मा के रूप में ग्राह्य हुआ। भले ही इसे भवभूति ने 'शब्द ब्रह्म का निवर्त' कहा किन्तु यही कविता जन–भावना की वाहिनी बनकर लोक में नई धारा का प्रवर्तन करने में समर्थ हुई। महर्षि वाल्मीकि चाहते थे कि ऐसी काव्य रचना करें जो अमर हो, जन–जीवन से सम्बद्ध हो, चतुर्वर्ग की प्राप्ति में सहायक हो, भाव–भाषा–छन्द–शैली–अलंकार की दृष्टि से नवीन हो, लोक रंजन और परलोक दोनों का साधक हो।[3] वे नायक का अन्वेषण कर रहे थे।[4] नारद से उन्होंने पूँछ रखा था कि गुण, बल, चरित्र, धर्मज्ञता, कृतज्ञता, सत्यवाणी, व्रत–पालन, सर्वभूतहित, ज्ञान, सामर्थ्य आदि की दृष्टि से कौन व्यक्ति संसार में श्रेष्ठ है– महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम्।[5]

वैदिक गायत्री की पवित्रता प्रदान करने के लिए उनकी कविता एक–एक वर्ण पर एक–एक सहस्त्र श्लोकों को समर्पित करती हुई 'चतुर्विंशति–साहस्री संहिता बन गई।

भोज ने अपनी रामायणचम्पू में वाल्मीकि को मधुर काव्य शैली का प्रवर्तक कहा है–

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

''मधुमय–भणितीनां मार्गदर्शी महर्षि:।''[6]

रामायण का सांस्कृतिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि भी साहित्यिक मूल्य सर्वोपरि है। यह ग्रन्थ परवर्ती काव्य रचनाओं का उपजीव्य रहा है। रामायण की कथा और शैली दोनों का ग्रहण परवर्ती रचनाओं में हुआ है। रामायण की कथा की अमरता के विषय में रामायण में ही संकेत किया गया है–

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।[7]

सांस्कृतिक महत्त्व–

इस महाकाव्य में मानव जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। यह काव्य और आचारशास्त्र का संयुक्त रूप है क्योंकि मानव जीवन का आदर्शरूप इसमें प्रस्तुत किया गया है। इस महाकाव्य में सामाजिक सम्बन्ध का अच्छा सम्पुट हमें देखने को मिलता है–

जैसे–

राम का आदर्शभूत मानव रूप, लक्ष्मण तथा भरत की भ्रातृशक्ति, सीता का पातिव्रत्य, विभीषण की न्यायप्रियता, रावण की हठधर्मिता, कुम्भकर्ण की निद्रा आदि। रामायण में पितृभक्ति, पुत्रप्रेम, स्वामिभक्ति, प्रजावत्सलता, भ्रातृस्नेह इत्यादि मानवीय गुणों का एवं सत्य, धर्म, सदाचार, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि सामान्य गुणों का विस्तार से प्रतिपादन किया गया है। राम के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और चारित्रिक गुणों का वाल्मीकि ने सूत्ररूप में चित्रण करके पुनः उनका विस्तृत प्रदर्शन किया है।[8]

'यश्च रामं न पश्येत्तु यं च रामो न पश्यति।
निन्दितः सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनं विगर्हतेङ्क्त।।'

वाल्मीकि रामायण में मानव–हृदय के सभी पक्षों का वर्णन किया गया है। पात्रों को उन्होंने विभिन्न परिस्थितियों में प्रस्तुत किया है, जिससे आज भी भारतीय संस्कार से युक्त व्यक्ति को जीवन के सभी स्तरों में दिशा–निर्देश रामायण से प्राप्त होता है। राजा के कर्त्तव्यों का वाल्मीकि ने व्यापक वर्णन किया है। राजा के न रहने पर प्रजा में सर्वत्र असुरक्षा तथा भय व्याप्त हो जाता है–

'नाराजके जनपदे धनवन्तः सुरक्षिताः।
शेरते निवृतद्वाराः कृषिगोरक्षजीविनः।।

(2/67/18)

धार्मिक दृष्टि से रामायण को महाभारत की अपेक्षा अधिक प्रशस्त माना गया है। स्कन्दपुराण के उत्तरखण्ड में पाँच अध्यायों में रामायण का धार्मिक महत्त्व निरूपित किया गया है। कहा गया है–

'रामायणमादिकाव्यं सर्ववेदार्थसम्मतम्।
सर्वपापहरं पुण्यं सर्वदुःखनिबर्हणम्।।
समस्तपुण्यफलदं सर्वयज्ञफलप्रदम्।

(रामायणमाहात्म्य 5/63)

साहित्यिक महत्त्व– रामायण को परवर्ती साहित्य का आधार कहा जा सकता है क्योंकि परवर्ती साहित्य को इसके द्वारा भाव, भाषा और शैली का निर्देश मिला है। माधुर्यमयी उक्तियों का आरम्भ रामायण में ही संस्कृत साहित्य में हुआ है। रामायण की भाषा सुन्दर, ललित, प्रांजल, प्रवाह–पूर्ण तथा परिष्कारयुक्त है। भाव के अनुरूप भाषा में आरोह–अवरोह का विन्यास वाल्मीकि ने ही आरम्भ किया है। जहाँ किसी घटना का विवरण देना हो वहाँ वाल्मीकि पौराणिक सरलता दिखाते हैं। जैसे–

''यामेव रात्रिं ते दूताः प्रविशन्ति स्म तां पुरीम्।
भरतेनापि तां रात्रिं स्वप्नो दृष्टोऽयमप्रियः।।[9]

इसी प्रकार वाल्मीकि ने उपदेश आदि देने में भी ऐसी ही सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। जैसे–

'मरणान्तानि वैराणि निर्वृतं नः प्रयोजनम्।
क्रियतामस्य संस्कारों ममाप्येष यथा तव।।[10]

वाल्मीकि जी ने अपनी भाषा को ईषतृ अलंकृत करके शैली–सौन्दर्य के प्रति जागरुक हो जाते हैं। उदाहरणार्थ सुन्दरकाण्ड में हनुमान लंका में जब चन्द्रोदय का अवलोकन करते हैं तब कवि का प्रकृति–प्रेम अलंकारों के आकर्षण में पड़कर प्रवाहित हो उठता है।

'हंसो यथा राजत– पंजरस्थः सिंही यथा मन्दर–कन्दरस्थः।
वीरो यथा गर्वितकंजरस्थश्चन्द्रोऽपि.....
.....विरराज चन्द्रः।।[11]

वाल्मीकि ने उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास आदि प्रमुख अलंकारों का तो प्रयोग किया ही है, यथासंख्य–जैसे अल्प्रचलित अलंकार का भी सुन्दर निवेश किया है। किष्किन्धाकाण्ड में वर्षावर्णन के प्रसंग में कहा गया है–

'वहति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति ध्यायान्ति नृत्यन्ति समाश्वसन्ति।
नथो घना मत्तगजा वनान्ताः प्रियाविहीनाः शिखिनः प्लवंगा।।[12]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्लोकत्वमापद्यत यस्य शोकः, रघुवंश 14/70
2. उत्तररामचरित 2/5 के बाद आत्रेयी का कथन
3. डॉ0 कलिपदेव द्विवेदी–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, पृ0 111
4. रामायण 1/1/2–4
5. वही, 1/1/5 (उत्तरार्ध)
6. रामायण चम्पू 1/8
7. रामायण 1/2/37
8. रामायण 2/17/14
9. रामायण 2/69/1
10. रामायण 6/111/100
11. रामायण 5/5/4–7
12. रामायण 4/27/28